विभिन्न संस्कृतियाँ

विभिन्न संस्कृतियाँ श्रृंखला, भाग 3 – अपराध

डा. डेविड प्लॉट

मेरे साथ अपनी–अपनी बाइबल में रोमियों अध्याय 8 खोल लें। सुसमाचारों के बाद प्रेरितों के काम की पुस्तक है और उसके बाद आती है रोमियों को लिखी पत्री। यह हमारा छः की श्रृंखला में तीसरा अध्ययन है। यदि आप पिछले दो अध्ययनों में से किसी एक में से चूक गए हैं तो मैं आपको प्रोत्साहित करूगा कि उसे देख लें। मेरे पास आपकी कहानियाँ पहुंच रही हैं। पिछले अध्ययन में हमने देखा था कि परमेश्वर काम करता है और हमें उसके सहकारी होने का अवसर प्राप्त है। अतः आपको उपलब्ध होना है, चौकस रहना है और अवसरों की खोज करना है।

मैं आपके साथ इन कहानियों को पढ़ना चाहता हूँ। वे अच्छी हैं। वे संघर्ष से भरी हुई हैं परन्तु मैं बस दो ही पढूंगा। हमें उसके साथ काम करने का अवसर प्राप्त है। मैं आशा करता हूँ कि इससे आपको संकल्पना समझ में आएगी – कहानी लिखने की सादगी और अवसर जो परमेश्वर प्रतिदिन हमें देता है। हमें परमेश्वर के साथ सहकारिता के अवसर प्राप्त हैं।

पहली कहानी,

मैं प्रतिदिन अपने सहकर्मी के साथ कार में जगह–जगह घूमता रहता हूँ। मुझे उसे बाध्य नहीं करना पड़ता है। वह मुझे जानता है। वह देखता है कि मैं अपना जीवन जी रहा हूँ। पिछले तीन सप्ताहों में परमेश्वर ने द्वार खोले हैं और हमारे वार्तालाप के बीच की दीवार गिरा दी है। उदाहरणार्थ, आज मेरे अभियोग के संबन्ध में चर्चा करते समय उसने अपने जीवन के अन्धकार पूर्ण पलों के बारे में बताया। जब उसने उस घटना पर आधारित अपना संकल्प सुनाया तब उसमें मसीह कहीं नहीं था। परमेश्वर की कृपा से मेरे लिए द्वार खुला था कि मैं उसके साथ बांट सकूं कि मेरे आनन्द और संतोष का आधार मसीह यीशु है चाहे समय आनन्द का हो या दुःख का, क्योंकि मसीह ने मुझे आशा बन्धाई है इसलिए मैं कल होने वाले वार्तालाप की प्रतीक्षा में हूँ। इसमें कोई कठिन काम नहीं है, केवल एक अवसर है कि परमेश्वर मेरे आसपास किसी के जीवन में जो काम कर रहा है उसमें हाथ बटाऊं।

दूसरी कहानी,

इस सप्ताह अत्यधिक असुविधाजनक समय में मेरी कार की बेटरी समाप्त हो गई। सहायता का फोन करके मैं सहायता आने तक सड़क के किनारे बैठा था। मेरे सहायक को मेरी स्थिति समझ न आने के कारण

उसने मुझे फोन किया। उसने बताया कि वह बरमिंगम में दो सप्ताह पूर्ण ही आया है। मैं खिन्न होने लगा। तब मुझे लगा कि मुझे अपना स्वभाव सुधारना है। मुझसे भेंट करने पर उसने बताया कि वह अपनी माता के निकट रहने के लिए यहां आया है। उसकी माता ने उसे बताया था कि बरमिंगम निवास हेतु अति मनोहर स्थान है। उसने बताया कि दो सप्ताह पूर्व जब वह पहले दिन काम पर से घर लौटा तो उसकी माता मर चुकी थी। मेरी कार चालू करने के पश्चात् मैं उससे इस शहर में नया जीवन आरंभ करने के बारे में बातें करने लगा। मैंने उसे आराधना में आने का निमंत्रण दिया और उसे विश्वास दिलाया कि वहां वह अनेक जनों से भेंट कर पाएगा जो उसकी सुधि लेंगे। तब मुझे अवसर मिला कि उस पर प्रकट करूं कि मरणोपरान्त जीवन कहां व्यतीत करने का प्रश्न उसके सामने आएगा। यह भी कि माता के वियोग में वह शान्ति पा सकता है। वह अभिभूत हुआ परन्तु उसने रूचि भी दिखाई और प्रकट भी किया कि उसे जीवन में तत्काल ही किसी बात की आवश्यकता है। मैं तब से ही उसके लिए प्रार्थना कर रहा हूँ और आशा करता हूँ कि वह शीघ्र ही आएगा। कहने की आवश्यकता नहीं, परमेश्वर ने दिखा दिया कि मेरी कार की बेटरी के कारण मुझे इस युवक से भेंट करने का अवसर मिला कि मसीह यीशु के प्रेम को इस युवक के साथ बांट सकूँ। यह कैसी आशिष है!

यदि परमेश्वर बरमिंगम में मनुष्यों के जीवन के निमित्त हम सब की प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल परिस्थितियों में बदल दे तो कैसा रहेगा?

दूसरी कहानी, – एक पति–पत्नी की

आपके उपदेश ने हमारे मस्तिष्क में घंटियां बजा दी जो आवश्यक थीं। हम आराधना से प्रस्थान कर रहे थे और हमारी शृंगिकाएं अब भी सक्रिय थीं। लगभग डेढ़ घंटे, जब हम रेस्तरां में खाना खा चुके तब वहां के सेवक, अधेड़ आयु, ने हमें उसके कॉमेडी प्रदर्शन में आंमत्रित किया। हमने उसे निमन्त्रण के लिए धन्यवाद दिया और अपनी अस्वीकृति प्रकट करते हुए कहा कि हम दिन भर बाहर रहेंगे। उसने पूछा कि हम कहां जा रहे हैं। हमने कहा कि हम अपने मिशन कार्य के संबन्ध में वेनेजूएला जा रहें हैं। हमारा इतना कहना ही बांध खोल देने के समान था। उसने कुछ वर्षों के अपने आत्मिक जीवन को हमारे सामने उण्डेल दिया। अन्त में उसने कहा कि परमेश्वर ने उसे अन्तिम अवसर दिया कि वह अपना आत्मिक जीवन सुधार ले। वह पिछले कई दिनों से प्रार्थना कर रहा था कि परमेश्वर उसके जीवन में किसी को लाए जो अपना जीवन खोलकर उसे मार्ग दिखाएं।

परमेश्वर जानता है कि वह क्या कर रहा है।

हमें ऐसा प्रतीत हुआ कि हम चुने गए हैं। परमेश्वर की स्तुति हो। मैंने उसे आमन्त्रित किया कि वह हमारे पुरुषों के समूह में बुधवार की सुबह आए। आपका कहना सही है कि चौकस रहने से हमें इस व्यक्ति के

जीवन में सहभागी होने का अवसर प्राप्त हुआ। सप्ताह में आगे चलकर आपकी बात सच निकली, परमेश्वर हमारे चारों और काम कर रहा है। वह व्यक्ति निश्चय ही हमारे बुधवार की सभा में आया और हमने कॉफी पीते हुए उसके साथ एक घंटा बातें कीं। उसका जीवन बड़ा ही जटिल रहा था – चर्च में काम, विवाह विच्छेद विभिन्न नौकरियां आदि। परमेश्वर उसके जीवन में काम कर रहा है और मेरे विचार में, मुझे उसका सहभागी होना है, उसके हाथ का साधन होना है। आपका धन्यवाद हो कि आपने मुझे अपनी कार्य सूची की अपेक्षा चौकस रहना और अपने मस्तिष्क को सतर्क रखना और परमेश्वर के काम में हाथ बंटाने के लिए उपलब्ध रहना सिखाया है।

दो कहानियां और हैं। अनेक कहानियां है परन्तु हम दो और देखेंगे।

मैं आपके साथ एक घटना की चर्चा करना चाहता हूँ जो मेरे मित्र के साथ पिछले सोमवार घटी मैं पवित्र आत्मा के लिए उपलब्ध और संवेदनशील था कि मुझे एक अवसर प्राप्त हुआ। मुझे स्पष्ट बोध था कि परमेश्वर काम कर रहा है और मुझ से सहकारिता की आशा रखता है। मेरे एक मित्र 95 वर्ष की आयु के हैं। मेरा अभ्यास है कि मैं सुबह के नाश्ते पर मित्रों से भेंट करता हूँ, उनके साथ कुछ कहानियां सुनता–सुनाता हूँ और फिर काम पर निकल जाता हूँ। इस सुबह मेरे अन्य मित्र नहीं थे। केवल एक ही मित्र और उसकी मकान मालिकिन, मेरी थी जो उसके उद्धार के लिए प्रार्थना कर रही थी। मुझे अवसर मिला कि उसके साथ सुसमाचार की चर्चा करूं। उसने अपने आपको दीन बनाया और प्रभु से याचना की कि उसके मन में आकर उसके पाप क्षमा करें और उसका उद्धार करे। अब वह महिमामय प्रभु से मिलने को तैयार है। प्रभु की स्तुति हो कि उसने मुझे अपनी योजना में सहकर्मी होने की अनुमति दी। स्मरण रखें कि परमेश्वर हमें अपने काम में इसलिए सहभागी नहीं बनाता है कि उसे हमारी आवश्यकता है परन्तु इसलिए कि वह हमसे प्रेम करता है।

अन्तिम कहानी।

इस सप्ताह मैं वेकेशन बाइबल स्कूल में पढ़ा रही थी। उस संपूर्ण समय जब मैं यहां थी, परमेश्वर मेरे मन में काम कर रहा था कि मुझे अपना विश्वास बांटना आवश्यक है। मैं यह स्वीकार करते हुए लज्जा का अनुभव करती हूँ कि मैंने अब तक बहुत कम मनुष्यों के साथ अपने विश्वास की चर्चा की है। वी.बी.एस. में बुधवार का पाठ था कि इन 20 बालिकाओं की कक्षा में उद्धार की योजना प्रस्तुत करूं। विषय कठिन नहीं था। बच्चों के अगुआ, किम्बरली ने इतने अच्छे शब्दों में सउदाहरण विषय समझाया कि मैंने प्रभु से कहा; ''मेरा प्रस्तुतिकरण तो इसका आधा भी अच्छा नहीं होगा।'' तभी मुझे आपके शब्द स्मरण आए कि परमेश्वर मनुष्यों के जीवन में काम कर रहा है और वह मेरी वाकपटुता नहीं आज्ञाकारिता चाहता है। मैंने उस कक्ष और कक्षा के लिए प्रार्थना की और अपनी कक्षा आरंभ की। पहले समूह के साथ तो मैं डर रही थी कि कुछ

कमी न रह जाए परन्तु दूसरे समूह में शिक्षण के समय मुझे कुछ राहत मिली। तीसरे समूह को सिखाते समय मैं समझ गई थी कि परमेश्वर ने सुधि ली है। चार लड़कियों ने उस दिन लिखा कि वे मसीह में विश्वास करना चाहती हैं। मैं केवल यह जानती हूँ कि परमेश्वर के परिवार में आज एक और सदस्य आ गया है। मेरे लिए जो आवश्यक था वह मेरा दुर्बल प्रयास था–मेरी कलम और पोस्टर बोर्ड। परमेश्वर की उद्‌भुत शक्ति ने शेष कार्य किया।

जब विश्वासियों का परिवार सुसज्जित हो, समर्थ हो और सक्षम हो कि सुसमाचार की चर्चा करे तब हमारे वैयक्तिक जीवन में क्या होता है? अतः परमेश्वर के कार्य की चर्चा करते रहें। मैं जो चाहता हूँ कि आज हम करें वह यह है कि संकट संस्कृतिक के संपूर्ण परिदृश्य को संयोजित करें। हम विभिन्न संस्कृतियों में सुसमाचार कैसे सुनाएं? चाहे वह बरमिंगम हो या होनड्यूराज़ हो या वेनेजूएला हो हमारे हज़ारो जन इस ग्रीष्म काल सुस्माचार प्रचार कर रहे हैं। हम विभिन्न परिस्थितियों में सुसमाचार कैसे सुनाएंगे? हमने उत्पत्ति 3 के अध्ययन में देखा था कि पाप के तीन मुख्य प्रभाव हैं। क्या किसी को याद है कि वे क्या हैं? पहला, हम परमेश्वर के सम्मुख दोषी हैं। दूसरा हम परमेश्वर के सम्मुख लज्जित हैं। तीसरा; हम परमेश्वर की उपस्थिति से भयभीत हैं। अतः हम में दोष, लज्जा और भय बसे हुए हैं। ये पाप के परिणाम हैं।

मैं पहले भी उल्लेख कर चुका हूँ कि जब में एशिया में गुप्त कलीसिया के अगुओं की प्रशिक्षण सभा हेतु यात्रा कर रहा था तब मैं एक पुस्तक पढ़ रहा था।

मैं उन्हे सुसमाचार सुनाने का प्रशिक्षण देने जा रहा था और रोमी मार्ग तथा चार आत्मिक नियमों से सुसज्जित था। सुसमाचार प्रचार करने की विभिन्न विधियां और इस पुस्तक को पढ़कर मैं सोचने लगा कि इस पुस्तक का लेखक जिस विषय पर विचार व्यक्त कर रहा था वह था, दोष लज्जा और भय सुसमाचार के प्रभावशाली परिणाम हैं। वे संसार की सब संस्कृतियों में व्याप्त हैं। तथापि कुछ संस्कृतियों में, एक दूसरे से बढ़कर है। किसी में दोष पर अधिक बल दिया गया है तो किसी में लज्जा पर। ऐसा नहीं है कि वे अन्य परिणाम उन संस्कृतियों में नहीं हैं परन्तु विभिन्न संस्कृतियों में परिणाम विशेष उभरे हुए होते है। मैं सोच में पड़ गया। मैं गुप्त कलीसिया की प्रशिक्षण सभा में पहुंचा और उन्हे सिखाने लगा कि सुसमाचार का प्रचार कैसे करें। मैंने रोमी मार्ग और चार आत्मिक नियमों की चर्चा की। वे ध्यान से सुन रहे थे। तब मैंने कहा, ''आइए, हम सुसमाचार की परिचर्चा करें कि वह पाप पर परमेश्वर के सामर्थ्य को कैसे प्रकट करता है। वह हमें भय से कैसे मुक्ति दिलाता है?'' अकस्मात ही वातावरण ऐसा हो गया कि जैसे संपूर्ण कक्ष में बत्तियां जल गई हों। वे कहने लगे, ''ठीक ऐसी ही तो हमारी संस्कृति है।'' जब आप गांवों में जाते हैं तो देखते हैं कि ग्रामवासियों ने घरों में मूर्तियां और नाना प्रकार के अंधविश्वास के प्रतीक लगा रखे हैं कि वे सुरक्षित रहें। वे अलौकिक शक्तियों से डरते हैं। वे इन प्रथाओं पर सुसमाचार के प्रभाव की चर्चा करने लगे। मुझे

तब वह बोध होने लगा कि सुसमाचार द्वारा हमारे दोष को निर्दोष बनाने की अपेक्षा उसका परिपूर्ण परिदृश्य भी तो होगा, संभवतः भय, परमेश्वर का सामर्थ्य और शान्ति या संभवतः लज्जा और प्रतिष्ठन भी सुसमाचार का भाग होंगे।

उस लेखक के अनुसार पाश्चात्य संस्कृतियां मुख्यतः दोषी विवेक पर आधारित हैं। उसका यह भी मानना है कि पाश्चात्य संस्कृति की नींव उचित या अनुचित, दोष या निर्दोष की मनोदशा पर आधारित हैं। हम सब अपने अधिकारों के बारे में चर्चा करते हैं, हम अपने अधिकारों को थामे रहते हैं। ये हमारा सौभाग्य है। हम असीमित समय और धन व्यर्थ गंवाते हैं, यह विवाद करने में कि समलैंगिकता उचित है या अनुचित? गर्भपात उचित है या अनुचित? कहीं युद्ध हो रहा है तो वह उचित है या अनुचित है? उचित और अनुचित का जहां तक प्रश्न है ये सब ठीक हैं। यह हमारी संस्कृति का मूल लक्ष्य है। मुझे उचित होना है और आपको भी उचित होना है। यही सबसे सुविधाजन स्थिति है जिसमें हम अपने आपको पाते हैं। यदि हम दो जन जहां बैठना चाहते हैं वहा बैठे हैं तो ठीक है। हमने देखा है कि हम अपने आप को उचित ठहराने के लिए नैतिक नियमों को भी बदल देते हैं। हम उचित और अनुचित की परिभाषा को बदल देते हैं कि अपने आप को उचित समझें। अतः हमारे सोचने का आधार यही है जबकि संसार में अन्य मनुष्यों का सोचना हमारे जैसा न हो। मेरे कहने का अर्थ यह नहीं कि उचित और अनुचित, दोष और निर्दोष के परिप्रेक्ष्य में सुसमाचार की व्याख्या अनुचित है। आप में से कुछ लोग सोच रहे होंगे कि ऐसा करके क्या हम गलत हैं? यदि ऐसा है तो मैं चाहता हूँ कि आप सोचें कि आप मेरी बात को सही सिद्ध कैसे करेंगे? हम अपने इन अध्ययनों में देखेंगे कि संपूर्ण धर्मशास्त्र में परमेश्वर के तीन गुना प्रकाशन का परिदृश्य विहित है जैसा हमने उत्पत्ति 3 में देखा कि परमेश्वर दोषी को खोजता है, लज्जा से ग्रस्त मनुष्य को ढांकता है और भय से घिरे मनुष्य को सुरक्षित करता है।

अतः हम अपने इन अध्ययनों में देखेंगे कि सुसमाचार किस प्रकार विवेक से संबद्ध है, किस प्रकार लज्जा से संबद्ध है और किस प्रकार भय से संबद्ध है। इस अध्ययन में हम एक मुख्य तथ्य पर ध्यान देंगे और उससे संबन्धित उदाहरणों के लिए मैं कुछ कहानियां सुनाऊंगा जिससे कि हम केवल अपनी ही कहानी नहीं परमेश्वर की कहानी को भी देखेंगे कि वह दोषी विवेक से कैसे निर्वाह करती हैं, वह भय से कैसे निर्वाह करती हैं और लज्जा से कैसे निर्वाह करती हैं और मनुष्यों को परमेश्वर की कहानी सुनाने में सक्षम होंगे। आशा करता हूं कि यह अध्ययन हमारे लिए मूल्यवान ठहरेगा। हम दोषी विवेक की संस्कृति में परमेश्वर की कहानी पर विचार करने से आंरभ करेंगे। मैं चाहता हूँ कि आप दोष और निर्दोष तथा उचित और अनुचित पर बरमिंगम वासियों के विचार सुनें।

दोषी अन्तःकरण वैश्विक अनुभव है! हम सब मन की उस भावना से परिचित हैं जो कोई अनुचित काम करने पर उठती है। जब आप लालबत्ती पार कर जाते है या ठहरों के संकेत पर नहीं रुकते तो आप जानते हैं कि आपने कोई अनुचित काम किया है। आप अपनी पत्नी से कुछ कहते हैं और उसका चेहरा देखते हैं तो आपका मन कहता है कि आपको ऐसा नहीं कहना था। आपके मन में स्वतः ही अपराध बोध जाग उठता है। हमारा केलब इेस छोटी आयु में जानता है कि उसे आग के पास नहीं जाना है परन्तु वहां जाकर वह कुछ छूता है और पलट कर देखता है कि परिणाम क्या होगा। हम में यह अनुभूति है जो हमें उचित और अनुचित का बोध कराती है। हमारी संस्कृति में अनेक जन हैं जो कहते हैं कि हम में उचित और अनुचित का परिशुद्ध भान उपस्थित नहीं है। परन्तु वे भी नैतिक मूल्यों को आपेक्षिक और सदाचार को निरंकुश बनाते हैं, क्योंकि वे चाहते हैं कि आप उन्हें उचित मानें और यदि आप उनसे सहमत नहीं तो आप उचित नहीं हैं, कहने का अर्थ यह है कि हम इस जाल से बच नहीं सकते।

अपराध बोध एक सत्यता है। हम सब उचित और अनुचित जानते हैं और हम सबके मन में ये नियम लिखे हुए हैं जो बाइबल की शिक्षा के अनुसार हमें संकेत दे देते हैं कि हमने सही किया या गलत। इस अपराध बोध पर विजय पाने के प्रयास में हम अनेक विधियां काम में लेते हैं। बौद्धिक रीति से भी हम अपने आप को समझाने का प्रयास करते हैं कि अन्ततः मैं मनुष्य ही तो हूँ। मुझे इस बात का दुःख नहीं होना चाहिए। प्रायः मनुष्य ऐसा ही करते हैं। हम अपनी नैतिकता की परिभाषा को भी बदलने का प्रयास करते हैं। हम उचित और अनुचित की परिभाषा को बदल कर अपने कार्यों के प्रति शान्ति पाना चाहते हैं। कुछ शारीरिक प्रयास भी हैंः मनुष्य शराब पीना आरंभ कर देते हैं, मादक पदार्थों का सेवन करने लगते हैं कि अपराधबोध को दबा सकें या ऐसा न भी करते हों। कुछ लोग अत्यधिक व्यस्त हो जाते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए या क्या नहीं करना चाहिए कि ऐसे प्रश्न का सामना करने का समय ही नहीं मिलता है। हम खेल और मनभावन कामों में व्यस्त होकर दोषी विवेक से मुक्ति पाने का प्रयास भी करते हैं अर्थात् हम जीवन को मनोरंजन में लीन कर देते हैं कि जीवन की गंभीरता का सामना न करना पड़े।

ये तो थीं बौद्धिक और शारीरिक विधियां। अब अपराधबोध से मुक्ति पाने की धार्मिक विधियां भी हैं जो सब से अधिक धोखा देती हैं। संभवतः मैं यह करूं या वह करूं, यदि मेरी दिनचर्या ऐसी हो या वैसी हो, यदि मैं अपने परिवार की ऐसी स्थिति में अगुवाई करूं तो यह वह ठीक हो जाएगा। संसार अपराधबोध से मुक्ति पाने की अनेक विधियां सुझाता है। मनोवैज्ञानिकों के कार्यालय लोगों से भरे रहते हैं जो दोषीविवेक से परेशान हैं – उन्होंने जो किया या जो नहीं किया, या किसी ओर ने किया या अन्य किसी कारण से मैं आज आपको यह बता देना चाहता हूं कि अपराधबोध से मुक्ति पाने के लिए परमेश्वर का समाधान संसार के समाधानों की तुलना में अनुपम एवं अद्वैत है। जहां तक अपराधबोध का प्रश्न है हम सब अपना–अपना बोझ उठाए हुए हैं। अतः हमारे लिए अच्छा होगा कि हम सुसमाचार में देखें कि अपराधबोध के लिए वहां

क्या है। मेरे विचार में हम इसे अन्तर्ग्रहण करेंगे क्योंकि हम देखेंगे कि हमारे पास मनुष्यों को सुनाने के लिए कैसा सुसमाचार है।

मैं चाहता हूं कि हम एक पद पढ़ें। तीन कहानियां इसका उदाहरण देती हैं। रोमियों 8:1 हम इसे कंठस्थ करेंगे।' 'अतः अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।'' आसान पद है? इसे बिना देखे दोहराएं।

यहां मुख्य शब्द हैं, ''दण्ड की आज्ञा नहीं'' इसका अर्थ क्या है। मैं आश्वस्त हूं कि यह मसीही विश्वास का सारांश है, सुसमाचार का आधारभूत सन्देश! जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। मैं चाहता हूं कि हम सुसमाचार में यीशु की कहानियों को देखें कि हमें ''दण्ड की आज्ञा नहीं'', इस पर प्रकाशन प्राप्त हो। हम पुनः रोमियों अध्याय आठ पर आएंगे परन्तु इससे पहले कुछ अन्य संदर्भ देखें। मरकुस अध्याय 2 निकालें। मेरा उद्देश्य यह है कि आप एक न एक कहानी को अन्तर्ग्रहण करें जिससे कि आप इसे अपने शब्दों में उन मनुष्यों को सुना पाएं जो अपराधबोध से संघर्षरत हैं कि यीशु किस प्रकार अपराधबोध से मुक्ति दिलाता है। अपराधबोध से ग्रस्त संस्कृति में आप परमेश्वर की कहानी कैसे सुनाएं, हम यही देखेंगे। मैं आपका ध्यान इन तीन कहानियों की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। विचार करें कि हम इन कहानियों की शिक्षा ही नहीं वरन् अन्यों के साथ इसके सन्देश को बांटना भी सीखेंगे। इसे हमारे द्वारा प्रसारित होना है। मरकुस 2:1–12 यह एक अद्भुत विवरण है। मरकुस 1 में यीशु विभिन्न रोगियों कां चंगा कर रहा है। मरकुस 1:33 से प्रकट है कि उसके द्वार पर बड़ी भीड़ थी कि रोगी चंगाई पाएं और दुष्टात्माग्रस्त मनुष्य मुक्ति पाएं। अध्याय 2 में हम यीशु की सेवकाई का उद्देश्य देखते हैं।

''कई दिन के बाद वह फिर कफरनहूम में आया, और सुना गया कि वह घर में है। फिर इतने लोग इकट्ठा हुए कि द्वार के पास भी जगह नहीं थी; और वह उन्हें वचन सुना रहा था। और लोग एक लकवे के रोगी को चार मनुष्यों से उठवाकर उसके पास ले आए। परन्तु जब वे भीड़ के कारण उसके निकट न पहुंच सके, तो उन्होंने उस छत को जिसके नीचे वह था, खोल दिया; और जब वे उसे उधेड़ चुके, तो उस खाट को जिस पर लकवे का रोगी पड़ा था, लटका दिया। यीशु ने उनका विश्वास देखकर उस लकवे के रोगी से कहा, 'हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।' तब कई शास्त्री जो वहां बैठे थे, अपने अपने मन में विचार करने लगे, 'यह मनुष्य क्यों ऐसा कहता है? यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है! परमेश्वर को छोड़ कौन पाप क्षमा कर सकता है? यीशु ने तुरन्त अपनी आत्मा में जान लिया कि वे अपने–अपने मन में ऐसा विचार कर रहे हैं; और उनसेकहा, 'तुम अपने–अपने मन में यह विचार क्यों कर रहे हो? सहज क्या है? क्या लकवे के रोगी से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए या यह कहना कि उठ अपनी खाट उठाकर चल फिर? परन्तु जिससे तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है। 'उसने उस लकवे

के रोगी से कहा, 'मैं तुझ से कहता हूं, उठ, अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा।' वह उठा और तुरन्त खाट उठाकर सब के सामने निकल कर चला गया; इस पर सब चकित हुए, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, हमने ऐसा कभी नहीं देखा।''

इस विवरण में आप यीशु के सामर्थ्य को देखें। मैं चाहता हूं कि आप इसे दो परिप्रेक्ष्यों में देखें कि मरकुस अध्याय 2 समझ पाएं। 1) यीशु के पास पाप क्षमा करने का अधिकार है। चार मनुष्य एक लकवे के रोगी को यीशु के पास बड़ी असामान्य विधि से लाते हैं। मरकुस अध्याय 1 में यीशु रोगियों को चंगा कर रहा था। अतः इन मनुष्यों ने सोचा कि क्यों न लकवे का वह रोगी चलने फिरने लगे परन्तु यीशु ने ऐसा नहीं किया। पद 5 में उसने पहली बात जो कही वह थी, ''पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।'' यहूदियों का यह मानना था कि ऐसा रोग मनुष्य के या उसके मां–बाप के या उसके पूर्वजों के पाप का दण्ड था। यूहन्ना अध्याय 9 में इसका प्रकटीकरण है। अतः इस मनुष्य को पाप का दण्ड मिला था। हम देखतें है कि यीशु कारण की जड़ तक जाता है। संपूर्ण धर्मशास्त्र में रोगी, होना, विकलांग होना और मरना संसार में पाप के कारण होता है। हम यह जानते हैं कि पाप ने संसार में प्रवेश किया – उत्पत्ति 3. यही कारण है कि हम सृष्टि नई पृथ्वी और नए आकाश की लालसा करते हैं जिसमें हमें कष्टों एवं मृत्यु से मुक्ति मिल जाएगी। इसी कारण यीशु निर्भीकता पूर्वक कहता है, ''पुत्र तेरे पाप क्षमा हुए।'' यीशु द्वारा यह कहने का अर्थ स्पष्ट था कि वह अपने आप को परमेश्वर कह रहा था।

सी॰एस॰ लूईस जो कभी नास्तिक था, विश्वास में आ गया। वह प्राचार्य था। उसने एक पुस्तक लिखी, ''मीयर ख्रिष्टियानिटी'' (कोरा मसीही विश्वास) जिसमें वह इस गद्यांश पर चर्चा कर रहा है कि उसके लिए यह जानना कैसी मान्यता रखता था कि यीशु पाप क्षमा कर सकता है। सी॰एस॰ लूईस कहता है कि यदि यीशु परमेश्वर नहीं है तो उसका यह कहना मूर्खता थी परन्तु धर्मगुरू इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। वे सोच रहे थे कि यह मनुष्य अपने आप को क्या समझता है। यीशु मन में जान गया कि वे क्या सोच रहे थे। यह परमेश्वर होने का एक और प्रमाण है। दूसरे शब्दों में, यीशु ने उनसे कहां कि रोग के लक्षणों को मिटाना उचित है या उसके जीवन में रोग की जड़ का उन्मूलन उचित है– उसके पाप का। पाप पर अपने अधिकार को सिद्ध करने के लिए यीशु ने उससे कहा, ''अपनी खाट उठा और घर चला जा।'' वह तुरन्त उठकर चल दिया। यीशु के पास पाप क्षमा का अधिकार है।

2) यीशु के पास हमारे कष्ट निवारण का अधिकार है। मैं चाहता हूँ कि हम यीशु के पाप क्षमा और कष्ट मोचन के अधिकार को वैश्विक अपराध बोध से प्रासंगिक बनाएं। मुख्य विषय अपराध बोध से उत्पन्न समस्याएं और, संसार में संघर्ष नहीं, हमारा पाप है जो हमने पवित्र परमेश्वर विरुद्ध किया है। हमारे अपराधबोध का कारण है कि हमने परमेश्वर को निराश किया है। बाइबल में स्पष्ट है कि हम में से हर एक

परमेश्वर के समक्ष खड़ा होगा और अपने जीवन का लेखा देगा। यदि हम अपने आराधबोध को बौद्धिक, शारीरिक और धार्मिक विधियों से दबा रहे हैं तो यह एक भयानक बात है। यीशु कारण की जड़ तक पहुँचता है और कहता है, ''मैंने तेरे पाप क्षमा किए।'' यह आपकी केन्द्रभूत आवश्यकता है। तो कष्टों के बारे में आप क्या कहेंगे डेव? बहुत लोग कष्ट उठा रहे हैं। हमारे मध्य भी अनेक जन शारीरिक कष्ट भोग रहे हैं। डॉक्टर आपके कष्ट का कारण खोजने में असफल हैं। हमारे अगुवे इस काम में यत्नशील हैं। जब हम कष्ट भोग रहे हैं तो शैतान आकर कहता है, ''यह तुम्हारे पापों का दण्ड है। परमेश्वर आपको दण्ड दे रहा है।'' ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे? आप बैरी से कहें,'' मेरे जीवन में दण्ड की आज्ञा नहीं है। मुझे अपनी आवश्यकता की जड़ तक क्षमा मिल गई है। मेरे सब पाप क्षमा हो गए हैं।'' अब कष्ट हो या दुःख हो या रोग हो मैं जीवन का सामना कर सकता हूँ। चाहे मेरा जीवन समाप्त हो जाए। मैं जानता हूँ कि मसीह के पास अधिकार है कि वह मेरा कष्ट मोचन अनन्तकाल तक करे क्योंकि मेरे पाप क्षमा करने में उसने अपना अधिकार और अपनी महिमा प्रकट की है, वह मरकुस अध्ययन 2 में पाप क्षमा के द्वारा अपना अधिकार और अपनी महिमा प्रकट करता है। हम इसे कभी कम न समझे, कभी सन्देह न करें। वह रोग के लक्षण नहीं हमारे जीवन के केन्द्र को देखता है और कहता है, ''पुत्र तेरे पाप क्षमा हुए।'' तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं। यशायाह 43:25 में परमेश्वर कहता है, ''मैं तेरे पाप फिर स्मरण नहीं करूंगा।'' यिर्मयाह 31:34 में भी यही लिखा है, ''मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा।'' यही मरकुस 2 का परिदृश्य है। हम पर पाप के दण्ड की आज्ञा नहीं है। क्यों? क्योंकि हमारे पाप क्षमा हुए हैं।

हम एक और कहानी देखेंगे। यह संभवतः आपका परिचित गद्यांश है। इसका एक पद लगभग सभी जन जानते हैं – यूहन्ना 3:16. इसका अर्थ क्या है। इसकी पृष्ठभूमि क्या है? मैं चाहता हूं कि हम संदर्भ सहित इसकी व्याख्या करें। हम यूहन्ना 3:1–21 में ''दण्ड की आज्ञा नहीं'' पर विचार करें:

फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था। उस ने रात को यीशु के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरू हो कर आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता। यीशु ने उस को उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। नीकुदेमुस ने उस से कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है? यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। अचम्भा न कर, कि मैं ने तुझ से कहा; कि तुझे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है। हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहां से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है। नीकुदेमुस ने उस को उत्तर

दिया; कि ये बातें क्योंकर हो सकती हैं? यह सुनकर यीशु ने उस से कहा; तू इस्त्राएलियों का गुरू हो कर भी क्या इन बातों को नहीं समझता। मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि हम जो जानते हैं, वह कहते हैं, और जिसे हम ने देखा है उस की गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते। जब मैं ने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं, और तुम प्रतीति नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूं, तो फिर क्योंकर प्रतीति करोगे? और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वहीं जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्रा जो स्वर्ग में है। और जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्रा भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए। ताकि जो कोई विश्वास करे उस में अनन्त जीवन पाए।। क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्रा को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहरा चुका; इसलिये कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्रा के नाम पर विश्वास नहीं किया। और दंड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उन के काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए। परन्तु जो सच्चाई पर चलता है वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रगट हों, कि वह परमेश्वर की ओर से किए गए हैं।

कहानी का सिंहावलोकन : यूहन्ना 3:10 में लिखा है कि नीकुदेमुस यहूदियों का सरदार था। मूल में इसका अर्थ है कि वह यहूदियों का शिक्षक, गुरु था। हम कह सकते हैं कि वह सर्वोच्च न्यायालय का अगुआ था। वह व्यवस्था का ज्ञाता था। उसका काम था व्यवस्था की रक्षा करना। वह जन्म से यहूदी था – परमेश्वर की वाचा की प्रजा का अंग। वह पहली शताब्दी का मुख्य शिक्षक था। वह यीशु के पास आकर वार्तालाप आरंभ करता है। उसका विषय है, परमेश्वर का राज्य। यीशु उससे कहता है कि नया जन्म पाए बिना वह परमेश्वर के राज्य का दर्शन भी नहीं कर सकता है। आप अपने आप को नीकुदेमुस के स्थान पर रख कर विचार करें। मैं जन्म से यहूदी हूं। मैं परमेश्वर की वाचा का भागीदार हूं। मैं परमेश्वर के चुने हुओं का अगुआ हूं। तेरे कहने का अर्थ क्या है कि मुझे नया जन्म लेना है। यीशु उससे कहता है कि उसने अपने आपको व्यवस्था और प्राचीनों की परम्परा और हर आवश्यक प्रथा के अधीन निष्ठावान रखा है परन्तु इससे उसे कुछ प्राप्त नहीं होना है। यीशु गिनती अध्याय 21 का संदर्भ देता है। इस्राइलवंशी जंगल में परमेश्वर से विद्रोह करने लगे तो परमेश्वर ने दण्डस्वरूप सांप भेजे जिनके काटने से लोग मरने लगे। मूसा ने परमेश्वर से उद्धार के लिए प्रार्थना की और परमेश्वर ने उससे कहा कि वह एक खम्भे पर पीतल का सांप बनाकर

लटका दे कि जो कोई उस सांप पर दृष्टिपात करे वह बचा रहे। यीशु ने यह विशेष उदाहरण क्यों दिया? वह नीकुदेमुस को समझाना चाहता था कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश पाना कर्मों से संभव नहीं है। उसे दृष्टि उठाकर कुछ देखना है। परन्तु कहां? ''मुझे देख। परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि अपना एकलौता पुत्र दे दिया– कि जो कोई उस पर विश्वास करे.... यह तेरे कर्म नहीं हैं। यह मेरा काम है। यह धार्मिक रीतियों का पालन करके अपराधबोध से मुक्ति पाने का प्रयास नहीं है। यह हम सबके लिए भी एक बड़ा सच है। मसीही जनों में आराधना में जाना एक आम अभ्यास है। हम यह सब करते हैं कि अपने जीवन में अपराध बोध को शान्त करें परन्तु अपने प्रयासों में हम कभी का ही आभास करेंगे। हमें आवश्यकता है कि अपने अपराधबोध से मुक्ति पाएं। यहां मैं चाहता हूं कि आप नीकुदेमुस की कहानी में मसीह के आगमन के उद्देश्य को देखें।

मसीह का उद्देश्य भी दो–मुखी है। सर्वप्रथम, वह इसलिए आया कि हमें अपने अपराधबोध के प्रयास से रोके – हमारे बौद्धिक, शारीरिक और धार्मिक प्रयासों से हमें रोके। उसने कहा, ''नीकुदेमुस प्रयास करना त्याग दें। जानता है क्यों? क्योकि परमेश्वर ने मुझे इस काम के लिए भेजा है। उसने मुझे संसार में इसलिए नहीं भेजा कि दण्ड दूं।'' यीशु इसलिए नहीं आया कि कहे, ''मैं इन मनुष्यों को दण्ड दूंगा और इन मनुष्यों को उद्धार दूंगा।'' उसने कहा, ''नीकुदेमुस तू बात नहीं समझ रहा है वह यह है कि संसार तो पहले ही से दण्ड की आज्ञा के अधीन है और उसमें तू भी है। तू तो अपने पाप के कारण दण्ड की आज्ञा में है। तुझे मनुष्य की आवश्यकता है जो दण्ड न दे परन्तु तुझे दण्ड से बचा ले। अतः प्रयास करना त्याग दे।'' वह इसलिए आया कि हमें प्रयास करने से रोके और उस पर भरोसा करना सिखाए। यीशु कहता है, ''मुझे देख। अपने पाप के अन्धकार से बाहर निकल जहां तू छिपा है और अपने पापों को ढांक रहा है। प्रकाश में आ। देख कि मैं कौन हूं और अपने दोष प्रकट कर। इसकी रमणीयता यहां है, ''मैं तेरे दोष क्षमा कर दूंगा।'' अतः वह नीकुदेमुस से कहता है जो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के प्रयास के बाद प्रयास में उलझा हुआ था, ''नीकुदेमुस तुझे क्षमा ही नहीं, नया जीवन मिलेगा। (यूहन्ना 3) अब तुझे अपने अतीत के दोष या अपराध को ढांकने की आवश्यकता नहीं है। मैं तुझे जीवन का नया आरंभ प्रदान करने आया हूं। तुझे पवित्र आत्मा द्वारा नया जीवन मिलेगा जिसमे बाहरी धार्मिक कृत्य करने की आवश्यकता नहीं होगी। मैं तेरे लिए आन्तरिक जीवन लाया हूं। मैं तेरा दोष मिटा कर तुझे नया आरंभ दूंगा। केवल मुझ पर भरोसा रख और विश्वास कर। यही यूहन्ना 3 की कहानी है – नया आरंभ।

अगली कहानी है यूहन्ना अध्याय 8 में अनेक विद्वानों का मत है कि यह अंश बाइबल का भाग नहीं है। हमारे आरंभिक लेखों में भी यह यथास्थान नहीं है। कुछ विचारकों का मानना है कि यह अंश बाइबल के किसी ओर भाग का है यदि बाइबल का भाग है परन्तु यह बाइबल का भाग तो है ही। अधिकांश विचारकों का मत है कि यह यीशु का वास्तविक चित्रण करता है प्रश्नों से घिरे इस अंश से में कुछ सीखने को

अवश्य मिलता है। अतः हम इस भावुक गद्य को पढ़ें और इस प्रकाश में पढ़े ''और वे जो मसीह में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं है।''

''परन्तु यीशु जैतून के पहाड़ पर गया। भोर को वह फिर मन्दिर में आया; सब लोग उसके पास आए और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा। तब शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को लाए जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी, और उसको बीच में खड़ा करके यीशु से कहा, 'हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते पकड़ी गई है। व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों पर पथराव करें। अतः तू इस स्त्री के विषय में क्या कहता है?' उन्होंने उसको परखने के लिए यह बात कही ताकि उस पर दोष लगाने के लिए कोई बात पाएं। परन्तु यीशु झुककर उंगली से भूमि पर लिखने लगा। जब वे उससे पूछते ही रहे तो, उसने सीधे होकर उनसे कहा, 'तुम में जो निष्पाप हो, वही पहले इसको पत्थर मारे।' और फिर झुककर भूमि पर उंगली से लिखने लगा। परन्तु वे यह सुनकर बड़ों से लेकर छोटों तक, एक एक करके निकल गए और यीशु अकेला रह गया, और स्त्री वहीं बीच में खड़ी रह गई। यीशु ने सीधे होकर उससे कहा, 'हे नारी, वे कहां गए? क्या किसी ने तुझ पर दण्ड की आज्ञा न दी?' उसने कहा, 'हे प्रभु, किसी ने नहीं।' यीशु ने कहा, 'मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना।''

हमने मरकुस अध्याय 2 में यीशु के अधिकार को देखा। हमने यीशु के आने के उद्देश्य को यूहन्ना अध्याय 3 में देखा। अब मैं चाहता हूं कि आप यूहन्ना अध्याय 8 में यीशु का असंगत परन्तु वस्तुतः युक्तियुक्त कथन देखते हैं। हम और संदर्भों में उसका मनुष्यत्व और ईश्वरत्व एक साथ देखते हैं परन्तु यहां यह अदभुत रूप से प्रकट है। यीशु परमेश्वर के न्याय को मानने के लिए पूर्णरूपेण समर्पित है। हम देखते हैं कि व्यवस्था के शिक्षक यीशु को फंसाने के लिए उस स्त्री को लाए। मूसा की व्यवस्था के अनुसार उस स्त्री को पथरवाह किया जाना था। (व्यवस्था विवरण 22:22, लैव्यव्यवस्था 20:10) अब यीशु यदि ''न'' कहता तो वह मूसा की व्यवस्था के विरूद्ध था। यदि वह कहता कि उसे पथरवाह करो तो वह रोमी विधि में अपराधी होता क्योंकि रोमी विधि में सार्वजनिक पथरवाह करना वर्जित था। अतः उसे क्या करना चाहिए? यहां आकर अनेक जन यीशु को व्यवस्था पालन में कट्टरता से पीछे हटते देखते हैं – यीशु व्यवस्था का निराकरण करने आया था। अब व्यवस्था का युग नहीं है। अब अनुग्रह का युग है परन्तु इस गद्यांश की शिक्षा यह नहीं है। यीशु व्यवस्था और परमेश्वर के न्याय को मान्यता देने के लिए मनोवेश के साथ समर्पित है। यहां वह पाप के प्रति उदार कदापि नहीं है। उसने कहीं नहीं कहा कि उसे व्यभिचार का दण्ड न मिले। व्यभिचार का दण्ड गंभीर था। व्यवस्थाविवरण में निर्दिष्ट है कि पाप का दण्ड मृत्यु है, पथरवाह है। व्यवस्थाविवरण 17:7 में लिखा है कि ऐसे दोष में एक से अधिक गवाह साक्षी दें और वे ही प्रथम हों कि पथरवाह करें। व्यवस्था के अनुसार पथरवाह करने वालों को निष्पाप होना था। वे धीरे–धीरे चले गए, बड़े से छोटे सब। क्यों? क्योंकि यीशु ने कहा कि जो निष्पाप हो वह सबसे पहले पत्थर मारे। यूहन्ना 8:46 में यीशु कहता है कि वह निष्पाप

है। वह स्त्री स्वयं को उस एकमात्र मनुष्य के समक्ष खड़ा पाती है जिसे पर पत्थर मारने का अधिकार है क्योंकि यीशुने कहा था कि जो निष्पाप हो वह उस पर पत्थर मारे। यीशु ने परमेश्वर के न्याय से इन्कार नहीं किया था। उस स्त्री में साहस नहीं था क्योंकि यीशु ने उसका पथरवाह किया जाना रोका नहीं था। अब वह उस व्यक्ति के सामने थी जो वास्तव में दण्ड की आज्ञा से उसे मुक्त करा सकता था। यीशु सिर उठाकर उस रोती हुई स्त्री से पूछता है कि उसके दोष लगाने वाले कहां हैं। उसने कहा, ''कोई नहीं है।'' एकमात्र जो उसे दण्ड की आज्ञा दे सकता था कहता है, उसने कहा, ''मैं भी तुझे दोष नहीं देता। जा और पाप न कर।'' कैसा अद्‌भुत दृश्य। दण्ड देनेवाला ही कह रहा कि वह उसे दोष नहीं देता है। परमेश्वर का न्याय कहां गया? परमेश्वर का न्याय कुछ सप्ताह बाद देखा जाएगा जब यीशु क्रूस उठाकर जाएगा – इस स्त्री का दोष अपने ऊपर लेकर। वह परमेश्वर के न्याय को थामता है परन्तु दूसरी ओर दया का दान भी करता है। यीशु का कैसा अद्‌भुत विवरण! वह कहता है, ''मैं व्यवस्था के लिए मनोभाव से पूर्ण हूं। मैं परमेश्वर के न्याय के लिए मन में जलन रखता हूं। दण्ड दिया ही जाएगा परन्तु वह दण्ड मैं तुम्हारे स्थान पर उठा लूंगा। हे स्त्री, जा और पाप न करना।'' यह रोमियों 8 की पृष्टभूमि है। रोमियो 1:18 से 3:20 तक हमारे दण्ड का भयानक चित्रण है। मनुष्य की दुष्टता के लिए परमेश्वर का क्रोध स्वर्ग में भड़क रहा है। पौलुस उसी के अध्याय 2 के मध्य अन्य जातियों के विषय चर्चा कर रहा है और यहूदी शिक्षक 'आमीन' कह रहे होंगे। ''हां वे दुष्ट जन हैं, उन पर परमेश्वर का क्रोध प्रकट होना ही चाहिए।'' अतः पौलुस अध्याय के मध्य यहूदियों के कान पकड़ता है, ''यदि तुम अपने आप को यहूदी कहते हो। यदि तुम व्यवस्था पर निर्भर करते हो और परमेश्वर के साथ अपने संबन्ध का गर्व करते हो तो तुम परमेश्वर की निन्दा करते हो।'' और अध्याय 3:9 में वह कहता है, '''कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। कोई समझदार नहीं; कोई परमेश्वर का खोजने वाला नहीं। सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए हैं; कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं। उनका गला खुली हुई कब्र है, उन्होंने अपनी जीभों से छल किया है, उनके होठों में सांपों का विष है। उनका मुंह श्राप और कड़वाहट से भरा है। उनके पांव लहू बहाने को फुर्तीले हैं, उनके मार्गों में नाश और क्लेश है, उन्होंने कुशल का मार्ग नहीं जाना। उनकी आंखों के सामने परमेश्वर का भय नहीं।'' यह प्रशंसा नहीं है। अन्त में वह कहता है, ''व्यवस्था जो कुछ कहती है, उन्हीं से कहती है, जो व्यवस्था के अधीन हैं, इसलिए कि हर एक मुंह बन्द किया जाए और सारा संसार परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे। क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा। इसलिए कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है। ''व्यवस्था हमें अधिकाधिक अपराधी बनाती है, पद 20 पर आकर पौलुस रुक जाता है क्योंकि वह परमेश्वर के समक्ष मनुष्यों के पाप के कारण अत्यधिक बोझिल है।

अच्छा हुआ कि पौलुस ने फिर से कलम उठा ली। वह संपूर्ण धर्मशास्त्र का सबसे महान् परिवर्तन प्रस्तुत करता है – पद 21, ''परन्तु अब व्यवस्था से अलग परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रकट हुई है, जिसकी गवाही

व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते थे। अर्थात् परमेश्वर की वह धार्मिकता जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करने वालों के लिए है। क्योंकि कुछ भेद नही; इसलिए कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में हैं, सेंत–मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।'' यह एक अच्छा पद है। हम उसकी महिमा से रहित ही नहीं हैं, हम उसकी महिमा को जानते भी नहीं है। हम उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है धर्मी ठहराए जाते हैं। यहां फिर असंगत बातें आती हैं। परमेश्वर कैसे न्यायी होकर हमें पाप से छुटकारा दे रहा है? रोमियो 3:21–26 में परमेश्वर ने यीशु को पश्चाताप बलि बनाया। उसे अपना दण्ड देना था इसलिए उसने अपने एकलौते पुत्र को हमारे स्थान पर दण्ड दे दिया। इस कारण वह कह सकता है, ''मैं भी तुझे दोष नहीं देता। तेरे पास नया जीवन है। तू स्वतंत्र है। मैं कुछ नहीं जानता। मैं तुम्हारे गुप्त अपराधों को भी नहीं देखता मैं केवल एक बात जानता हूं कि मसीह में तुम स्वतंत्र हो। तुम स्वतंत्र हो।

यही कारण कारण है कि रोमियों अध्याय 8 ऐसा महिमामय अध्याय है। यही कारण है कि मार्टिन लूथर ने इसे संपूर्ण बाइबल में विजय का अध्याय कहा क्योंकि यीशु ने हमें निर्दोष बना दिया। रोमियों अध्याय 4 और 6 सिखाता है कि यह सब विश्वास के द्वारा है। हम अपने पाप और अपने अपराधों की मुक्ति के लिए प्रयास करते करते थक जाते हैं परन्तु पार नहीं लगते। पौलुस रोमियों सात में कहता है –

''जो मैं करता हूं उसको नही जानता; क्योंकि जो मैं चाहता हूं वह नहीं किया करता, परन्तु जिससे मुझे घृणा आती है वही करता हूं। यदि जो मैं नहीं चाहता वही करता हूं, तो मैं मान लेता हूं कि व्यवस्था भली है। तो ऐसी दशा में उसका करनेवाला मैं नहीं, वरन् पाप है जो मुझ में बसा हुआ है।'' वह हमें सिर दर्द दे रहा है। हमारा सिर चकरा रहा है। वह अन्त में कहता है, ''मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं।'' हम सब मानते हैं कि हम अभागे मनुष्य हैं। वह फिर कहता है, ''मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा? हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो।'' यह रोमियों 8:4 से पूर्व का है। क्या यह संघर्ष वास्तविक है? पूरे अध्याय 8 में कष्टों का विवरण है परन्तु यह उस महिमा की तुलना में कुछ नहीं जो एक दिन हम में प्रकट होगी। अतः यदि शैतान हम से कहे, ''तुम अपने पाप से बच नहीं सकते। तुम उसे छिपा नहीं सकते। तुम अयोग्य हो। तुम्हें तो आराधना में भी नहीं जाना चाहिए। तुम अपने आपको समझते क्या हो? क्या यह सब होते हुए तुम परमेश्वर के राज्य में अन्तर ला पाओगे?'' वह हमे त्रस्त कर देता है परन्तु मैं कहता हूं आप उसकी आंखों में आंखें डालकर कहिए, ''यदि परमेश्वर मेरी ओर है तो मेरा विरोधी कौन हो सकता है?''

''जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सबके लिए दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा? परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर ही है जो उनको धर्मी ठहराने वाला है। फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह ही है जो मर गया वरन् मुर्दों में से जी भी

उठा, और परमेश्वर के दाहिनी ओर है, और हमारे लिए निवेदन भी करता है। कौन हमको मसीह के प्रेम से अलग करेगा? तथा क्लेश या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार? जैसा लिखा है, 'तेरे लिए हम दिन भर घात किए जाते हैं, हम वध होने वाली भेड़ों के समान गिने गए हैं। परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं। क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्ग दूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य, न ऊंचाई, न गहराई, और न कोई सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।'' (रोमियों 8:32–39) कोई दण्ड की आज्ञा नहीं! कोई दण्ड की आज्ञा नहीं!

आप चाहे कैसे भी अपराधबोध से संघर्ष कर रहे हों। अपने अतीत के बुरे कामों के कारण आपका विवेक बोझिल है। आपको मुक्ति नहीं मिल रही तो मैं आपको स्मरण कराता हूं कि यीशु के अधिकार से आप क्षमा पा चुके हैं। आप स्वतंत्र हैं। आपके पास नए आरंभ का समय है। वे जो मसीह में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। उसकी प्रतिज्ञाएं धर्मशास्त्र में व्याप्त हैं। वह कहता है, ''तुम निष्कलंक हो।'' आप और मैं अपनी संपूर्ण गंदगी के साथ सर्वशक्तिमान परमेश्वर द्वारा निष्कलंक घोषित किए गए हैं। आप मसीह की धार्मिकता से सुसज्जित किए गए हैं। आप निर्दोष हैं। आप सर्वांगीण है। आप शुद्ध हैं। आप परिशुद्ध हैं। आपको क्षमा किया गया है। परमेश्वर की स्तुति हो! आप अब दोषी नहीं हैं। मसीह यीशु के लहू के द्वारा अब आप निर्दोष हैं!

हमारी सहभागिता का उद्देश्य है हमें अपराध–बोध से ग्रस्त संस्कृतियों में सुसमाचार सुनाने के लिए सुज्जित करना, सामर्थी बनाना, और सक्षम करना। परन्तु मेरे विचार में हमें इससे पहले कि हम वास्तव में सुसमाचार सुनाएं, सुसमाचार हमारे मनों में जड़ पकड़े। संभव है कि कुछ के लिए सुसमाचार हमारे अपराधबोध को ढांके या उसका उन्मूलन करे।